अंतरा-शब्दशक्ति

ख्वाबों की दहलीज़

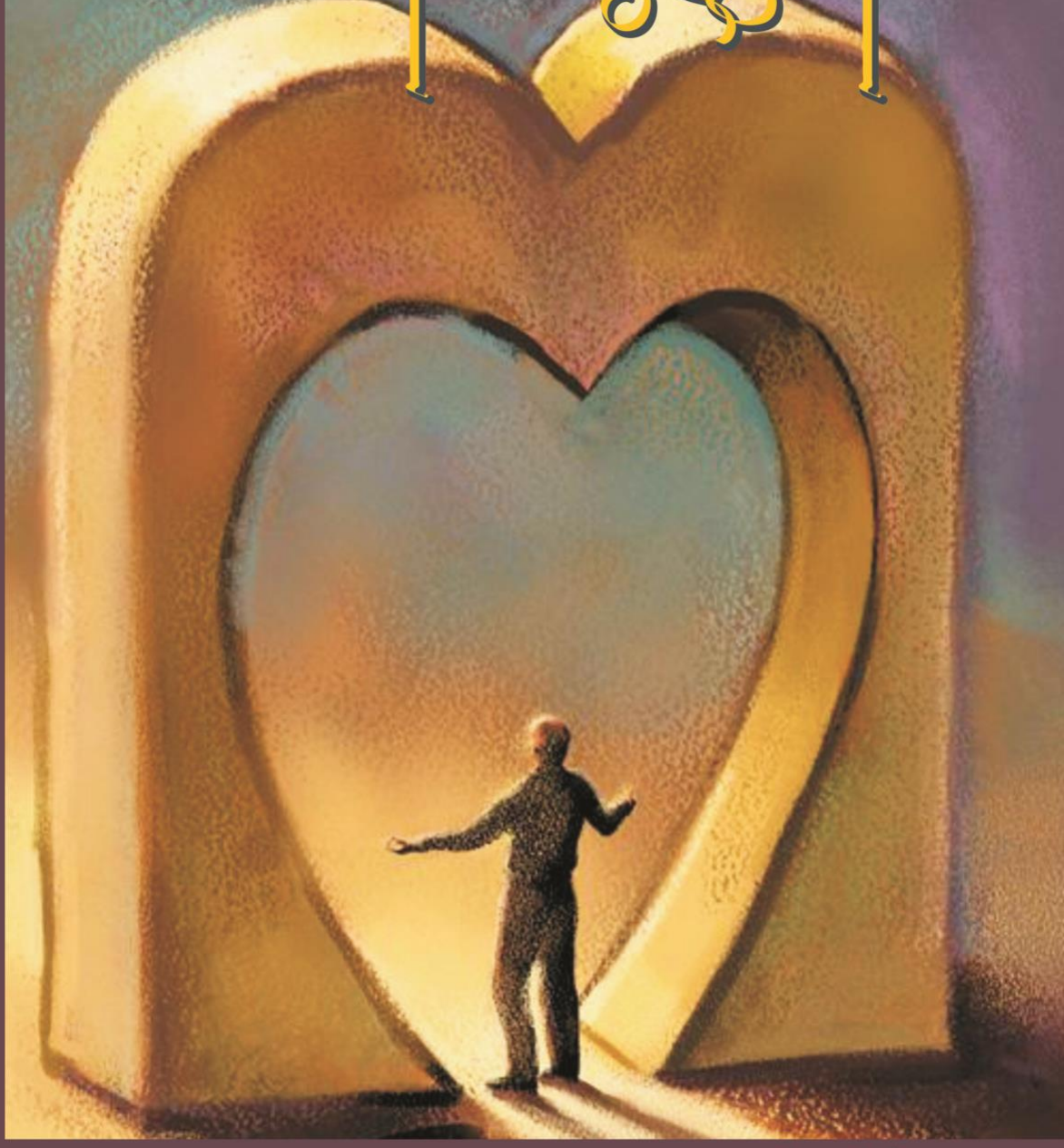

काव्य संग्रह

मेघा योगी

ख्वाबों की दहलीज़

(काव्य संग्रह)

मेघा योगी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-06-2

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१८- मेघा योगी
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Khawabo ki dahlij by Megha Yogi

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मन की बात

मध्यमवर्गीय साधारण परिवार में जन्म हुआ, दादाजी म. प्र. पुलिस में सेवारत थे, पिताजी शिक्षक एवं माँ गृहणी, यूँ तो कलम का हाथ में आना इस बात का परिचायक है कि आप माँ सरस्वती के अति प्रिय हैं किंतु परिवेश को नकारा नहीं जा सकता।

पारिवारिक माहौल ऐसा रहा कि बचपन से ही पूजा पाठ तथा आध्यात्म में रुचि उत्पन्न हो गई,जिस दौर में स्त्रियों का घर की दहलीज़ लाँघना भी बहुत बड़ी बात हुआ करती थी,उस दौर में मेरी परदादी जो कि अनेक विद्याओं (गूढ़ सिद्धियों) की ज्ञाता थीं ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया,बचपन उनके यात्रा वृत्तांत और कहानियों को सुनकर बीता,तभी से कल्पना लोक की यात्रायें आरंभ हो गयीं जिसने आगे चलकर लेखन में खासी भूमिका निभाई।

संध्या के समय दादा जी रामायण का पाठ किया करते थे,तुलसी रहीम के दोहे और हिंदू महानायकों की कथाओं ने बाल्य मन पर गहरा प्रभाव डाला, जैसे कि प्रत्येक संतान के लिए माता पिता आदर्श हुआ करते हैं, इसी प्रकार मेरे व्यक्तित्व पर भी माता पिता का बहुत प्रभाव है।

माँ घर बाहर के प्रत्येक कार्य में इतनी पारंगत कि आज भी मैं उनकी निपुणता को देख विस्मित हो जाती हूँ, दूसरों का सम्मान करने के साथ माँ ने खुद के आत्मसम्मान को बनाये रखने का मूल मंत्र भी दिया,और साथ ही अपने निर्णय स्वयं लेने का अधिकार भी।

पिताजी को पुस्तकों में रुचि है उनके पुस्तक संग्रह से अनेक पुस्तकें पढ़ने का सौभाग्य मुझे मिला, पिताजी को लेखन में भी रुचि रही संभवतः मुझे में भी लेखन का गुण पिताजी से ही मिला,परन्तु परिस्थितिवश पिताजी की रचनायें प्रकाशित न हो सकीं,मैं आशा करती

हूँ अतिशीघ्र साहित्य जगत को उनकी रचनाओं का योगदान प्राप्त होगा, मैं ने सदा ही माता-पिता में एक उच्च एवं सकारात्मक विचारधारा को देखा और उसी वैचारिक पोषण ने मेरी कलम को संबल प्रदान किया,मैं बचपन से ही तुकबंदी किया करती थी,इसी क्रम में स्कूल,कॉलेज की पढ़ाई भी हो गई,परंतु गंभीरता से लेखन के विषय में कभी सोचा भी नहीं था,किंतु कहते हैं न कि जीवन में कब क्या घटित होगा इसके लिए परमात्मा के द्वारा समय निश्चित किया जाता है अतः जिस प्रकार सफल पुरुष के पीछे स्त्री का हाथ होता है उसी प्रकार सफल स्त्री के पीछे भी पुरुष का हाथ होता है और वो पुरुष मेरे पति हैं जिन्होंने मुझे लेखन के लिए बहुत प्रोत्साहित किया।

और कालगति आप सभी के सानिध्य में ले आई,
इस प्रकार मेरी लेखन यात्रा का आरंभ होता है
आशा है
मेरा हर लफ़्ज गूँजेगा,... ख्वाबों की दहलीज़ पर,....!

मेघा योगी

अनुक्रमणिका

1. मेरा हर लफ्ज गूँजेगा 7
2. गजल कहूँगी 8
3. क्यों करते नहीं हो 9
4. साथ-साथ 10
5. जा रहा है 11
6. खुदा हो जैसे 12
7. ख़्वाब की दहलीज़ 13
8. झुका न करो 14
9. गम हो न हो खुशी 15
10. सिखाने लगे हैं 16
11. खुदा हो गये हो तुम 17
12. पापा जी 18
13. निशानी रह गयी 19
14. हौसला मिल जाएगा 20
15. जब कोई दिलदार नहीं था 21
16. आज सच को बयान कर देंगे 22
17. क्या किया जाए 23
18. अब तक लगे 24

19. कैसे गुज़ारा कर लिया 25
20. पर हौसलों के 26
21. पुकारा है आज भी 27
22. दिल लगा ही नहीं 28
23. अब जिया जाये 29
24. दिल की उड़ान 30
25. सफर में साथ 31
26. दर्द लेकिन न हो 32

मेरा हर लफ्ज गूँजेगा

जो सच के साथ है उसको,झुका कोई नहीं सकता!
अगर है हौसला तो फिर,गिरा कोई नहीं सकता!!

नहीं दरकार है यारों किसी को भी किसी से पर;
ये सच अपने जनाज़े को उठा कोई नहीं सकता!!

जो है मसरूफ़ दौलत के ज़खीरों को जुटाने में;
कदर रिश्तों की फिर उसको,बता कोई नहीं सकता!!

पलट सकती है बाज़ी भी,भरोसा वक्त का क्या है;
सिकंदर को भी लगता था,हरा कोई नहीं सकता!!

ये तन माटी का है "मेघा" इसे मिलना है माटी में;
मेरा हर लफ़्ज गूँजेगा मिटा कोई नहीं सकता!

गजल कहूँगी

मिटा के हस्ती मैं अपनी सारी तुझे खुदा कर गजल कहूँगी;
सनम ये साँसो की रौनकें सब तुझे अता कर गजल कहूँगी !!

हाँ जिस्म महिवाल सोहनी का,डुबा गई थी वो कच्ची माटी;
मिटा न पाई जो इश्क़ उनका वही वफा कर गजल कहूँगी !!

लगी हुई है जो मेरी जानिब,वही तुझे भी जला रही है ;
जो और भड़का दे इश्क़े आतिश,मैं वो हवा कर गजल कहूँगी!!

फिरे फकीरों सा रात भर तू, है तुझको आख़िर तलाश किस की;
ऐ चाँद सानो पे मेरे आजा तुझे सुला कर गजल कहूँगी!!

सनम तू ईमान मेरा अब से,ये जिस्मों जाँ सब निसार तुझ पर;
मैं तेरी राहों में सुर्ख गुल सा ये दिल बिछा कर गजल कहूँगी !!

है मुझ पे उस रब की ये इनायत,जो उसने "मेघा" कलम है बख़्शी;
कलम जो गुलजार बन के महके,मैं मुस्कुरा कर गजल कहूँगी !!

क्यों करते नहीं हो

बू अराजकता की फैली,मंद क्यों करते नहीं हो;
विष बुझी हर गंध को मकरंद क्यों करते नहीं हो!!

लुट रही जब बेटियों की आबरू हर इक गली में;
जम गया क्या रक्त,भारत बंद क्यों करते नहीं हो!!

जो जला दे दिल में ज्वाला,गूँज से कप जाये अंबर;
आज उठ कर ऐसा सुरभित छंद क्यों करते नहीं हो!!

निम्न होती मानसिकता औ मनुजता खो गई है;
ऐ युवा खुद को विवेकानंद क्यों करते नहीं हो!!

हिंदु मुस्लिम राजनीति,धर्म पर नारे लगाते;
काम इनसे आके बाहर चंद क्यों करते नहीं हो!!

द्वेष ईर्ष्या छल कपट का अब दिलों पर राज "मेघा";
गैर की खुशियों में भी आनंद क्यों करते नहीं हो!!

साथ साथ

आवाज़ अपने हक में उठाने के साथ साथ;
दिल में भी खलबली है जमाने के साथ साथ!!

खुद पर रहे यकीन हो तर्कश की भी ख़बर;
तीरों पे हो निगाह निशाने के साथ साथ!!

माटी का जिस्म उसपे ये बरसात का सितम ;
करते भी क्या हम खुद को मिटाने के साथ साथ!!

चालाकियाँ सिखाई तजुरबे ने कुछ हमे;
ईमानो धर्म दीन सिखाने के साथ साथ! !

हम क्या थे वक्त ने हमें क्या-क्या बना दिया;
इक दौर मिला दोस्त पुराने के साथ साथ!!

रब की नजर है तुझ पे भी "मेघा" ये याद रख;
मासूम दिल किसी का सताने के साथ साथ!!

जा रहा है

कलम पे जोर डाला जा रहा है;
गुबारे दिल निकाला जा रहा है!!

पिघल कर दर्द लावा बन गया जो;
उसे लफ़्ज़ों में ढाला जा रहा है!!

जो देखी तीरगी की सरपरस्ती;
सहम कर अब उजाला जा रहा है!!

लगी है आग मज़हब की शह्र में;
लो भूखों का निवाला जा रहा है!!

सुना है नाम पे रिश्तों के यारों;
सपोला कोई पाला जा रहा है!!

परखने आज फिर क़िस्मत को "मेघा";
कोई सिक्का उछाला जा रहा है!!

खुदा हो जैसे

दम पे इंसान के ही अब तो खुदा हो जैसे;
उसके किरदार से कोई न बड़ा हो जैसे!!

लोग चुपके से ही कुछ ऐसे दबा देते हैं;
उनको दुखती हुई हर नब्ज़ पता हो जैसे!!

जो भी मिलता है मुझे राय दिया करता है;
हर हुनर उसको विरासत में मिला हो जैसे!!

मुस्कुराता है वो तकलीफ़ में मेरी यारों;
सिर्फ दस्तूर यही अब तो बचा हो जैसे!!

कान आहट पे मेरी ऐसे रखे हैं"मेघा";
सबको वेतन पे नया काम मिला हो जैसे!!

ख़्वाब की दहलीज़

ख़्वाब की दहलीज़ पर तेरा नज़ारा चाहिए;
तू मेरा है सिर्फ रब का ये इशारा चाहिए।।

मैं तेरी धड़कन को अपनी इस नजर से चूम लूँ;
इस कदर मुझको तेरे दिल पर इज़ारा चाहिए।।

आज आकर तू मेरी तन्हाइयाँ महका सनम;
बस तेरी बाहों में शामों का गुजारा चाहिए।।

तिश्नगी बढ़ती गई मैं रेत का सहरा हुई;
इक तेरी चाहत का रिमझिम सा फुहारा चाहिए।।

क्यों मचा कोहराम की जो मयकदे से यारियाँ;
बेसहारा हूँ किसी का तो सहारा चाहिए।।

चाँदनी रातें वही हो औ परस्तिश इश्क की;
मौत से पहले मुझे वो पल दुबारा चाहिए।।

इश्क़ की परवाज़ लेकर मैं उड़ी आकाश में;
मुझको चौखट पर सजाने को सितारा चाहिए।।

झुका न करो

अपनी हस्ती को तुम फना न करो;
बात से अपनी यूँ फिरा न करो!!

रास जिनको अदब नहीं आता;
उनके आगे कभी झुका न करो!!

क़ह्र बरपायेगा खुदा तुम पर;
बेटियों को यूँ गमज़दा न करो!!

रस्म के नाम पर जहाँ वालों;
मेरे सर कोई भी रिदा न करो!!

दर्द आँसू जुदाई के मंजर;
हासिले इश्क़ हैं डरा न करो!!

दाँव पर आन देश की जब हो;
धर्म के नाम पर बँटा न करो!!

जीस्त अपनी तो कायदा अपना;
बात लोगों की फिर सुना न करो!!

हुस्न,दौलत है चार दिन मेघा;
अपने ईमान से डिगा न करो !!

गम हो न हो खुशी

दिन चार जिंदगी से मिले हैं उधार के;
बैठा न अब तो जायेगा,हिम्मत को हार के!!

हम वक़्त हैं गुजर गए तो,लौटते नहीं;
मत वक़्त को गँवाइये ,हमको पुकार के!!

ये सूफियाँना वस्ल है,मिलना है रूह से;
खूँटी पे जिस्म टाँग देंगे,हम उतार के!!

कैसे बयान हम करें,फुरक़त के दौर को;
इस जिंदगी में दिन थे,वही तो क़रार के!!

बुलबुल सयानी हो गई,दुनिया को देख कर;
सैयाद आज जा रहा है,बिन शिकार के!!

"मेघा" यूँ ढाल दिल को कि गम हो,न हो खुशी ;
आयेगा खुश्बुओं का मज़ा बिन बहार के!!

सिखाने लगे हैं

वो मंजर बहुत याद आने लगे हैं ;
बदलने में जिनको जमाने लगे हैं !

हमीं ने सिखाये सभी हर्फ़ जिनको;
हमें खोलना मुँह सिखाने लगे हैं!

बहुत दर्द दिल में समाया हैं उनके;
जो रोते हुए को हँसाने लगे हैं!

नहीं कद्र जिनको मेरी उम्र भर थी;
जरूरत पे अपना बनाने लगे हैं!

लो इज्ज़त जरा क्या नवाज़ी है उनको;
हमें उँगलियों पर नचाने लगे हैं!

वो माटी की गुड़िया,वो कागज की नैया;
वो "मेघा"मुझे तो खजाने लगे हैं!

खुदा हो गये हो तुम

दीनों धरम ईमान ख़फा हो गये हो तुम;
मेरी इबादतों का सिला हो गये हो तुम!!

आसां नहीं जहाँन में बनना भी आदमी;
लगता है इसलिए ही खुदा हो गये हो तुम!!

सुनता नहीं है कोई जिसे इस जहाँन में;
बेटी के लब की जैसे सदा हो गये हो तुम!!

हर रंजो गम में मेरे सदा साथ जो रहे;
मेरे लिए तो माँ की दुआ हो गये हो तुम!!

सूरत पे हर किसी की यहाँ बस नक़ाब हैं;
यारों से मिल रहा वो दगा हो गये हो तुम!!

कहते जो क़त्ल करके ज़माना ख़राब है;
उन चंद शरीफ़ों की अदा हो गये हो तुम!!

"मेघा" मेरे शेरों को जो अंदाज़ दे नया;
उर्दू ज़ुबान जैसी अदा हो गये हो तुम!!

पापा जी

डाँट लगाते,प्यार जताते,सीख सिखाते पापा जी;
हाथ पकड़कर जीवन पथ में राह दिखाते पापा जी!!

गजलें,ठुमरी,गीत रुबाई, लोरी, दोहा,चौपाई;
पंचतंत्र की रोज कहानी हमे सुनाते पापाजी!!

याद करूँ जब जब भी रब को सूरत दिखती पापा की;
बड़े जतन से घर को चारों धाम बनाते पापा जी!!

होंठों पर आने से पहले हर ख्वाहिश पूरी करते;
एक के बदले दस दस चीजें लेकर आते पापाजी!!

कोई दुःख पापा के होते ,हमें नहीं छू पाता है;
मतलब की दुनिया ये सारी,साथ निभाते पापाजी!!

घर भर की खुशियों की ख़ातिर,तोड़ दिये अपने सपने;
मेहनत कर के खून पसीना,खूब बहाते पापा जी!!

धूप-छाँव सुख दुःख के मेले,ठोकर लगती राहों में;
बड़े प्रेम से साहस देकर,हमें उठाते पापाजी!!

कभी दुखा दें बच्चे दिल तो,चुपके चुपके रोते हैं;
माफी देकर हर गलती पर गले लगाते पापा जी!!

नहीं चाहिए कुछ भी "मेघा" कुदरत बचपन लौटा दे;
साँझ सबेरे गोद बिठाकर,लाड़ लड़ाते पापा जी!!

निशानी रह गयी

साथ बीते चंद लम्हों की निशानी रह गयी;
हाथ में तस्वीर दिलबर की पुरानी रह गयी!!

इश्क़ मेरा जब से दुनिया की नज़र में आ गया;
हो रही थी जो मुक़म्मल वो कहानी रह गयी!!

वो गले मिलकर गया है जबसे मुझसे दोस्तों;
जिस्म है महका सा, रक्खी इत्रदानी रह गयी!!

चल दिये घर से मगर मंजिल तलक पहुँचे नहीं;
रास्ते की ठोकरों में जिंदगानी रह गई!!

प्यास के आगे तो "मेघा" कम समंदर लग रहा;
अब सिमट लहरों में दरिया की रवानी रह गयी!!

हौसला मिल जाएगा

लाख मुश्किल आयेंगीं पर रास्ता मिल जाएगा;
मेरी हर अच्छाई का मुझको सिला मिल जाएगा!!

साथ नामों के घरों पर ओहदे लिख तो दिये;
गर रही इंसानियत दिल में,ख़ुदा मिल जाएगा!!

बद्जुबानी का नहीं ये सोच कर शिकवा किया;
मैं नहीं तो उसको कोई दूसरा मिल जाएगा!!

साथ मेरे ऐ सनम गर दो कदम तू चल सके;
प्यार तेरा न सही पर हौसला मिल जाएगा!!

आँख तक उठती नहीं है सामने जिसकी मेरे;
वो बुराई में मेरी मुँह खोलता मिल जाएगा!!

आज लम्हें थाम हमने हाले दिल कह तो दिया;
कुछ न कुछ "मेघा" जिगर में अनकहा मिल जाएगा!!

जब कोई दिलदार नहीं था

जीवन का भी सार नहीं था;
जब कोई दिलदार नहीं था!!

घाव दिये बातों से उसने;
लाया वो तलवार नहीं था!!

ज़ख्म मिला फूलों से हमको;
राहों में तो खार नहीं था!!

उसके दिल से निकले क्या हम;
मिला कोई घरबार नहीं था!!

आज सफ़ीना डुबा दिया है;
अब कोई उस पार नहीं था!!

नेकी के सँग जीना "मेघा";
इतना भी दुश्वार नहीं था!!

आज सच को बयान कर देंगे

क्यों न कुछ नेक काम कर जायें;
इससे पहले कि हम गुज़र जायें !

अब्र कुछ देर को ठहर जा अब;
लौट के पंछी अपने घर जायें!

इनको अक्सर कुरेद लेती हूँ ;
ज़ख्म ऐसा न हो कि भर जायें!

और अब कौन सा ठिकाना है;
उनके दामन में ही बिखर जायें !

अब भी इंसान बसते हों जिसमें;
हम भी ऐसे किसी नगर जायें !

खौफ़ घर में भी और बाहर भी ;
बेटियाँ अब भला किधर जायें !

आज सच को बयान कर देंगे ;
इस से पहले कि हम भी डर जायें!

उनको सज़दे भला करे कैसे ;
जो कि नजरों से ही उतर जायें !

जिनकी उजली कमीज़ है मेघा ;
क़ाश भीतर से भी निखर जायें!

क्या किया जाए

मुझी तक लौटतीं मेरी सदायें क्या किया जाए;
नहीं सुनता ख़ुदा मेरी दुआयें क्याकिया जाए!!

हरिक लम्हा यहाँ बस खौफ़ का मंजर दिखाई दे;
लगें सहमी हुई चारों दिशायें क्या किया जाए!!

यहाँ बेटों पे है उन्माद,बंदिश है नहीं कोई;
मिलें बेटी को ही हरदम सज़ायें क्या किया जाए!!

वो राँझा हीर के यारों हुये किस्से पुराने हैं;
न अब वो इश्क़ है न वो व़फायें क्या किया जाए!!

कभी आँधी,कभी तूफां,कभी लहरें,सुनामी हैं;
नहीं चलतीं मेरे हक में हवायें क्या किया जाए!!

मुआ ये हिज़्र अब मुझ को न जीने दे न मरती हूँ;
नहीं लगतीं मुझे कोई दवायें क्या किया जाए!!

न झाँके जो गिरेवां में है ऊँगली दूसरों पर ही;
उसे शीशा भला कैसे दिखायें क्या किया जाए !!

तड़पती रूह है जिनमें जो दिल पर बोझ हैं "मेघा";
वो रिश्ते तोड़ दें या कि निभायें क्या किया जाए!!

अब तक लगे

वो सनम पत्थर का,मुझ को तो खुदा अब तक लगे;
दिल के टुकड़े कर दिये पर,बाव़फा अब तक लगे!

तोड़ कर रिश्ते सभी वो चल दिये हो कर खफ़ा;
कुछ नहीं है दरम्याँ पर,सिलसिला अब तक लगे!

मेरी कमियों को गिना दो रूबरू ऐ दोस्तों;
पीठ पीछे ज़िक्र इस दिल को बुरा अब तक लगे!

उम्र भर हारा किये अब जीत हिस्से आई तो;
जीत का ये जश्न क्यों सबको बुरा अब तक लगे!

इश्क़ था इक हादसा जो हो गया सो हो गया;
कुछ नहीं ये जिंदगी उस के बिना अब तक लगे !

माँगते मन्नत में बेटों को यहाँ दर दर सभी;
घर कोई सूना मगर बेटी बिना अब तक लगे!

बेटियों का लाँघना दहलीज़,छूना आसमां;
सच कहूँ लम्बा बड़ा ये फासला अब तक लगे!

आन की "मेघा" रिदायें बेटियों के सर पे ही;
ये रिवाज़ों का ज़खीरा खोख़ला अब तक लगे !

कैसे गुज़ारा कर लिया

खार दामन में लिए गुल को इशारा कर लिया;
जिंदगी तेरा सितम हमने गँवारा कर लिया !

रास्तों की ठोकरें रोती हैं मेरे हाल पर;
मुझसे मेरी मंज़िलों ने यूँ किनारा कर लिया!

इक ज़रा सी बात पर मुझसे ख़फा वो हो गये;
सोचती हूँ बिन मेरे कैसे गुज़ारा कर लिया!

कौन कहता है कि टूटा दिल कभी जुड़ता नहीं;
इश्क़ ही तो था,इसे हम ने दुबारा कर लिया!

है सुना "मेघा" कि तन्हा जिंदगी कटती नहीं;
हमने इन तन्हाइयों को ही सहारा कर लिया!

पर हौसलों के

कभी कोई काँटा चुभा ही नहीं है!
तेरा दर्द से राबता ही नहीं है!!

उड़ानों में है मेरी पर हौसलों के
हदों का तो मुझ को पता ही नहीं है!!

नज़र जिस्म पर ही रही जिसकी हरदम
कभी इश्क़ उस ने किया ही नहीं है!

बनाता कोई जोे महल ताज जैसा;
वो शाहेजहाँ फिर हुआ ही नहीं है!

सरे राह तन्हा चले ज़िन्दगी भर;
कभी साथ उस ने दिया ही नहीं है!!

हबीबों ने जब खेला है मेरे दिल से;
मुझे अब किसी से गिला ही नहीं है!!

ज़फाओं के बदले लुटाता मुहब्बत;
कोई शख़्स मुझ सा मिला ही नहीं है!!

किताबों सी "मेघा" खुली ज़िन्दगी ये;
कोई राज़ दिल में छिपा ही नहीं है!!

पुकारा है आज भी

सागर में चाँद हमने उतारा है आज भी;
दिलकश अज़ीम सर्द किनारा है आज भी!!

मदहोश कर रहा है ये मौसम भी दिलनशीं;
आजाइये कि तुमको पुकारा है आज भी!!

ले जाये दूरियाँ न मेरी जान ही सनम;
यादों में तेरी वक़्त गुजारा है आज भी!!

इक दूसरे का अक़्स चलो देखें चाँद में;
दोनों का एक ही तो सहारा है आज भी!!

यूूँ दिल जला रहे हैं तेरे इंतज़ार में;
इस अंजुमन को हमने सँवारा है आज भी!!

सूरत की गर्द हमसे उतारी नहीं गयी;
पर आइने को हमने निखारा है आज भी!!

जिस्मों की बात इश्क़ में करते नहीं सनम;
इस रूह पे तेरा ही इज़ारा है आज भी!!

"मेघा" नहीं है तुझ पे मेरे इश्क़ का असर;
तेरे सिवाय कुछ न गवारा है आज भी!!

दिल लगा ही नहीं

दिल लगा ही नहीं मेरा गुलज़ार में;
जीस्त अच्छी गुज़र हो रही खार में।।

आ गई है मुझे भी ये बाज़ीगरी;
जीत रखते हैं कैसे छिपा हार में।।

टूट जो दिल गया तो कोई गम नहीं;
कौन सिक्का चला ही सका प्यार में।।

मैं नहीं चाहती ख़्वाब से जागना;
जन्नतों सा सुकूं तेरे दीदार में।।

आज खुद पर भरोसा जगा है मेरा;
शुक्र,वो चल दिया छोड़ मझधार में।।

लुट गई आबरू आज फिर से कोई;
बस यही तो ख़बर रोज अखबार में।।

ऐ खुदाया मेरे वो सलामत रहे;
जिसके सर छत नहीं तेज बौछार में।।

अश्क़ से ही निभाना है "मेघा"तुझे;
जल गई हर खुशी ग़म के अंगार में।।

अब जिया जाये

चाक दिल का जरा सिया जाये;
तोड़ रश्मों को अब जिया जाये!!

जाम को चूर कर दिया हमने;
आज आँखों से ही पिया जाये!!

बह्र को कब तलक निभाये हम;
आज दिल से ही लिख दिया जाये!!

जिंदगी भर जिये ज़माने को;
अपनी ख़ातिर भी कुछ किया जाये!!

ले सहारा मैं चल भी सकती थी;
सोचा अहसान क्यों लिया जाये!!

दिल की उड़ान

चिलमन में निगाहों के इक ख़्वाब सा पलता है;
इक दीप उमींदों का तूफान में जलता है।।

साँसों में रखे आँधी आँखों में शरारों को;
वो शख़्स ही दुनिया के हालात बदलता है।।

इस दिल की उड़ानें तो आकाश से ऊँची हैं
सूरज को बुझाने का अरमान मचलता है

इक रोग पुराना है सब इश्क़ जिसे कहते;
आँखों में भरे आँसू दिल तोड़ के छलता है।।

होते हैं भले दुश्मन उस शख़्स की यारी से;
मौसम की तरह हर दिन जो रँग बदलता है।।

इक मोड़ जवानी का आता है सफ़र में यूँ;
हर शख़्स यहीं आकर क्यों यार फिसलता है।।

कुछ ज़िक्र करें यारों उन वस्ल की रातों का;
जम रूह जहाँ जाती बस जिस्म पिघलता है।।

है रेत भरा सहरा सागर में भी खारापन;
इंसान ही है इक जो सौ रँग बदलता है।।

हम यार बड़े कायल हैं उसकी रवानी के;
दिल चीर के पर्वत का दरिया जो निकलता है।।

ये वक्त किसी का भी होगा न हुआ "मेघा";
हर रोज़ ये लम्हों में हाथो से फिसलता है।।

सफर में साथ

सफर में साथ मेरे चल रहा है;
मगर मुझसे ही यारों जल रहा है!!

मुझे तुझसे नहीं कोई भी शिकवा;
जिसे देखो वही तो छल रहा है!!

नजर में आ नहीं सकता किसी के;
सपोला आस्तीं में पल रहा है!

कोई अच्छा मगर इतना है कैसे;
इसी इक सोच में दिन ढल रहा है!!

मेरे दुश्मन की महफिल यूं सजी के;
मेरा चर्चा वहाँ भी चल रहा है!!

दर्द लेकिन न हो

ज़ह्र का ज़ाम मुझको पिला दीजिये;
दीप जलते हुये सब बुझा दीजिये!

चोट दिल पर लगे दर्द लेकिन न हो;
कोई एसा हुनर अब सिखा दीजिये!

हर किसी ने दिए दर्द मुझको यहाँ;
आप ऐसा करें कुछ नया दीजिये!

आप पर कोई उंगली उठाये अगर;
उसको शीशे में सूरत दिखा दीजिये!

बोझ जो ज़िंदगी पर लगे हर कदम;
ऐसे रिश्तों को दिल से भुला दीजिये!

मत करो तुम किसी से उमीदें यहाँ;
फ़र्ज अपने मगर सब निभा दीजिय!

हर किसी की हैं मजबूरियाँ दोस्तों;
बेवफ़ा को जरा सी वफा दीजिये!

बात उसकी करो न मेरे सामने;
मेरे जख्मों को अब न हवा दीजिये!

है जरूरी बहुत झुकना "मेघा" मगर;
टूटने तक न खुद को झुका दीजिये!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - मेघा योगी
जन्म - 08 जून , गुना (म.प्र.)
माता-पिता - श्रीमती सरोज योगी-श्री अशोक कुमार योगी
पति - श्री उमेश योगी
शिक्षा - बी.एस.सी. बायोटेक्नॉलॉजी, पी.जी.डी.सी.ए.
ई मेल - meghayogi306@gmail.com
प्रकाशन - साझा गज़ल संग्रह - गुंजन ।
- साझा काव्य संग्रह -नारी से नारी तक ।
विभिन्न पत्र पत्रिकाओं एवं वेब पत्रिकाओं में समय-समय पर रचनाओं का प्रकाशन ।
सम्मान - अंतरा शब्द शक्ति सम्मान ।
- जिज्ञासा अलंकरण सम्मान ।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-06-2
मूल्य- 55/-